काल में उत्पन्न कर सकती है। यहाँ शुद्ध आय को मालूम करने के लिए कुल आय में से पूँजी सम्पत्ति की वर्तमान लागतों को घटना पड़ता है। यदि एक पूँजी सम्पत्ति के भावी जीवन काल को एक वर्षीय कालों की श्रेणी जैसे $Q_1, Q_2, Q_3 \cdots Q_n$ में विभाजित कर दें तो भावी आय की गणना करने के लिए हमें इन सभी वर्षों के शुद्ध लाभ को जोड़ना होगा। इसे निम्न सूत्र से प्रदर्शित कर सकते हैं —

$$P_y = Q_1 + Q_2 + Q_3 \cdots Q_n$$

जहाँ P_y प्रत्याशित आय को $Q_1, Q_2 \cdots$ प्रति वर्ष मिलने वाली प्रत्याशित आय को प्रदर्शित करते हैं।

पूर्ति कीमत (Supply Price)

प्रारम्भिक विनियोग करते समय जो पूँजी वस्तुओं पर आय की जाती है, उसे पूर्ति कीमत कहते हैं। अर्थात नयी मशीनरी लगाते समय या प्लांट लगाते समय जो खर्च किया जाता है उसे पूर्ति कीमत कहते हैं। इसे प्रतिस्थापन लागत भी कहा जाता है। निवेश के समय उद्यमी केवल पूँजी परिसम्पत्ति से प्राप्त होने वाली भावी आय को ही ध्यान में नहीं रखता बल्कि वह सम्पत्ति की लागत को भी ध्यान में रखता है। अर्थात पूर्ति कीमत को भी ध्यान में रखता है। एक सरल उदाहरण के द्वारा हम पूँजी की सीमांत उत्पादकता (MEC) की गणना को समझ सकते हैं —

यहाँ साधन की पूर्ति कीमत = C_n

प्रत्याशित आय = Q

शुद्ध प्रत्याशित आय = $Q - C_n$

माने पूँजीगत साधन का जीवनकाल हो एक वर्ष ही मानते, तो

$$MEC = \frac{\text{शुद्ध प्रत्याशित आय}}{\text{पूर्ति कीमत}}$$

$$e = \frac{Q - C_n}{C_n} = \frac{Q}{C_n} - \frac{C_n}{C_n} = -1$$

$$\text{or } \frac{Q}{C_R} = I + e$$

$$\text{or } C_R = \frac{Q}{I+e}$$

इसीप्रकार यदि पूंजीगत साधन का जीवन काल n वर्ष हो तो

$$C_R = \frac{Q_1}{(I+e)} + \frac{Q_2}{(I+e)^2} + \frac{Q_3}{(I+e)^3} + \cdots \frac{Q_n}{(I+e)^n}$$

उपयुक्त सूत्र को निम्न रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है –

Supply price = Discounted Prospective yields

$$C_R = \frac{Q_1}{(I-r)} + \frac{Q_2}{(I+r)^2} + \frac{Q_3}{(I+r)^3} + \cdots + \frac{Q_n}{(I+r)^n}$$

जहाँ r = rate of discount है।

Prof Keynes के अनुसार पूंजी की सीमान्त उत्पादकता कटौती या बट्टे (discount) को उस दर के बराबर होती है जो किसी मशीन के सम्पूर्ण जीवन काल में वर्ष-प्रतिवर्ष की प्रत्याशित आयों के वर्तमान मूल्यों को उसकी (मशीन) पूर्ति कीमत के बराबर कर देता है।

इसप्रकार MEC वह दर है जिस पर किसी पूंजी परिसम्पत्ति की भावी आय से बट्टा काटकर उसकी पूर्ति कीमत के बराबर समतुल्य की जाती है।

ब्याज दर (Rate of Interest)

Keynes के अनुसार ब्याज दर उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ मुद्रा की मांग तथा मुद्रा की पूर्ति एक दूसरे के बराबर हो जाए।